त्रिपक्षीय संघर्ष

[TRIPARTITE STRUGGLE]

सम्राट हर्षवर्धन की मृत्यु के पश्चात् उसका साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो गया और उसका स्थान छोटे राज्यों ने ले लिया, परन्तु कन्नौज की कीर्ति नष्ट नहीं हुई। उत्तर-भारत के सम्राट की राजधानी होने का गौरव पाटलिपुत्र के स्थान पर अब कन्नौज ने ले लिया था। आगे होने वाले भारत के यशस्वी शासकों ने कन्नौज को राजधानी बनाने अथवा उसे अपने आधिपत्य में करने के लिए परस्पर संघर्ष किये। सम्राट हर्ष के पश्चात् कन्नौज के सम्मान को सर्वप्रथम यशोवर्मा (प्राय: 690-740 ई.) ने पुनः स्थापित किया। उसके समकालीन यशस्वी शासकों में चालुक्य-सम्राट विनयादित्य और कश्मीर-सम्राट ललितादित्य थे। कन्नौज को प्राप्त करने के लिए इन दोनों ने यशोवर्मा से संघर्ष किया। विनयादित्य और यशोवर्मा का संघर्ष, सम्भवतया, निर्णयात्मक नहीं हुआ परन्तु ललितादित्य ने यशोवर्मा को, निस्सन्देह, परास्त किया। यशोवर्मा के उत्तराधिकारियों में से कोई भी योग्य नहीं हुआ और आठवीं सदी के बाद के समय में कन्नौज एक नवीन वंश—आयुध-वंश—के अधिकार में चला गया। 770 ई. में वज्रायुध कन्नौज का शासक बना परन्तु उसका राज्य छोटा ही था। उसकी मृत्यु के पश्चात् 783 ई. या 784 ई. में उसका पुत्र इन्द्रायुध कन्नौज का शासक बना। उसके भाई चक्रायुध ने इसका विरोध

---

1 Dr. R. C. Majumdar : *The Classical Age.*
2 Dr. R. C. Majumdar : *Ibid.*
3 Dr. R. C. Majumdar : *The Age of Imperial Kannauj.*
4 Dr. R. C. Majumdar : *The Classical Age.*
5 Dr. R. C. Majumdar : *The Age of Imperial Kannauj.*
6 Dr. Dashratha Sharma : *Early Chauhan Dynasties.*

किया। ऐसी ही परिस्थिति में जबकि कन्नौज के लिए इन दो भाइयों में संघर्ष चल रहा था, भारत की नवोदित शक्तियों ने कन्नौज को अपने अधिकार में करने का प्रयत्न किया। आठवीं सदी के बाद के इस समय में भारत में तीन शक्तिशाली राज्यों का निर्माण हो चुका था— राजस्थान में **गुर्जर-प्रतिहार**, बंगाल में **पाल** और दक्षिण-भारत के महाराष्ट्र और उसके निकट के भू-क्षेत्रों में **राष्ट्रकूट**। इन तीनों वंशों के विभिन्न सम्राटों ने चक्रवर्ती सम्राट होने के आदर्श की पूर्ति का प्रयत्न किया तथा तीनों वंशों ने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अधिकतम राज्य-विस्तार और कन्नौज को अपने अधिकार में करने का प्रयत्न किया। इस कारण, इन तीनों वंशों के विभिन्न सम्राटों में भारत-सम्राट कहलाने और कन्नौज को प्राप्त करने की प्रतिष्ठा को प्राप्त करने के लिए संघर्ष हुआ जो **त्रिदलीय** अथवा **त्रिपक्षीय संघर्ष** कहलाया। यह संघर्ष 8वीं सदी के अन्तिम समय से आरम्भ होकर 10वीं सदी के अन्त तक लगभग 200 वर्षों तक चला।

उन शक्तिशाली सम्राटों और एक बड़े साम्राज्य की राजधानी बने रहने अथवा बनाये रखने के प्रयत्न का गौरव पाटलिपुत्र के स्थान पर कन्नौज को प्राप्त हुआ। कन्नौज हर्ष की मृत्यु के पश्चात् भी वैभव और शक्ति का केन्द्र-बिन्दु बना रहा, कन्नौज के सम्राट सम्पूर्ण उत्तर-भारत के शासक बनने का प्रयत्न करते रहे और भारत की रक्षा का उत्तरदायित्व भी सम्भालते रहे। इसी कारण, अरब सिन्ध और मुल्तान पर अधिकार कर लेने के बावजूद भी मुस्लिम भारत में अन्दर प्रवेश करने में असफल हुए। यही नहीं अपितु प्रायः 250 वर्षों तक भारत इस्लाम की उस शक्ति को, जिसने मध्य और पश्चिमी एशिया तथा यूरोप और अफ्रीका के बहुत बड़े भाग को जीतने व सम्पूर्ण यूरोप की संयुक्त शक्तियों से मुकाबला करने में सफलता पायी थी, अपनी उत्तर-पश्चिमी सीमाओं पर रोक सका। इसका मुख्य कारण यह था कि राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और धार्मिक एवं सामाजिक गिरावट होने के बावजूद भी भारत 1000 ई. तक हिन्दुओं के राजधर्म, सामाजिक मान्यताओं और धार्मिक आदर्शों को सुरक्षित रख सका था।

कन्नौज को अपने आधिपत्य में लेने का *पहला कदम* प्रतिहार-शासक वत्सराज (770-805 ई.) ने उठाया। उसका आशय कन्नौज को विजय करके सम्पूर्ण गंगा की घाटी पर अपना अधिकार करना था। उस समय कन्नौज का शासक इन्द्रायुध था। इन्द्रायुध ने वत्सराज के आधिपत्य को स्वीकार कर लिया। परन्तु उसी अवसर पर पाल-शासक धर्मपाल और राष्ट्रकूट-शासक ध्रुव भी कन्नौज और गंगा की घाटी को अपने अधिकार में करने के लिए उत्सुक हुए थे। वत्सराज ने आगे बढ़कर धर्मपाल (770-810 ई.) से युद्ध किया और उसे परास्त कर दिया। परन्तु उसी अवसर पर राष्ट्रकूट-शासक ध्रुव (780-793 ई.) ने उत्तर-भारत में प्रवेश किया। ध्रुव का युद्ध गंगा-यमुना-दोआब में वत्सराज से हुआ जिसमें उसकी विजय हुई। ध्रुव ने पाल-शासक धर्मपाल पर आक्रमण करके उसे भी परास्त किया और कन्नौज को अपने आधिपत्य में ले लिया। परन्तु ध्रुव को शीघ्र ही दक्षिण-भारत वापस जाना पड़ा। ध्रुव के इस आक्रमण से प्रतिहारों को तो हानि हुई परन्तु पाल-शासक धर्मपाल को उससे लाभ हुआ। ध्रुव के वापस चले जाने और प्रतिहारों की शक्ति के दुर्बल हो जाने से धर्मपाल को कन्नौज पर आक्रमण करने का अवसर मिला। उसने इन्द्रायुध को हटाकर उसके भाई चक्रायुध को कन्नौज के सिंहासन पर बैठाया जिसने उसके आधिपत्य को स्वीकार कर लिया।

परन्तु कन्नौज पर धर्मपाल के प्रभाव की स्थापना प्रतिहार-वंश के लिए एक चुनौती थी। वत्सराज की मृत्यु 805 ई. में हो गयी। उसकी मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र नागभट्ट द्वितीय (805-833 ई.) प्रतिहार-शासक बना। नागभट्ट द्वितीय ने अपने वंश की प्रतिष्ठा को

पुनः स्थापित किया और निकट के क्षेत्रों में अपनी स्थिति को दृढ़ करके उसने कन्नौज पर आक्रमण किया। उसने चक्रायुध को परास्त करके कन्नौज पर अधिकार कर लिया और धर्मपाल पर भी आक्रमण किया। उसने धर्मपाल को परास्त करके उसके राज्य की सीमाओं में मुंगेर तक घुसने में सफलता प्राप्त की। परन्तु नागभट्ट द्वितीय भी अधिक समय अपनी सफलता का उपभोग नहीं कर सका। उस समय राष्ट्रकूट-शासक गोविन्द तृतीय था। वह स्वयं महत्वाकांक्षी था, प्रतिहार-वंश से उसकी वंशानुगत शत्रुता चली आ रही थी और सम्भवतया, चक्रायुध और धर्मपाल ने नागभट्ट द्वितीय के विरुद्ध उससे सहायता भी माँगी थी। इस कारण, गोविन्द तृतीय (793-814 ई.) ने उत्तर-भारत पर आक्रमण किया। चक्रायुध और धर्मपाल ने बिना युद्ध किये ही उसकी अधीनता स्वीकार कर ली और कन्नौज पर गोविन्द तृतीय का प्रभाव स्थापित हो गया। परन्तु नागभट्ट द्वितीय ने बुन्देलखण्ड में किसी स्थान पर उससे युद्ध किया। नागभट्ट द्वितीय उस युद्ध में परास्त हुआ (809-810 ई.)। परन्तु गोविन्द तृतीय भी अधिक समय उत्तर-भारत में नहीं रह सका। वह दक्षिण-भारत वापस चला गया। इस कारण, प्रतिहार और पाल शासकों में कन्नौज को प्राप्त करने के लिए पुनः प्रतिस्पर्धा आरम्भ हो गयी। गोविन्द तृतीय के वापस जाने के पश्चात् नागभट्ट द्वितीय और धर्मपाल दोनों को ही अपनी शक्ति को दृढ़ करने का अवसर मिला परन्तु दोनों में कोई युद्ध नहीं हुआ। सम्भवतया कन्नौज पर नागभट्ट का अधिकार हो गया।

परन्तु धर्मपाल के उत्तराधिकारी देवपाल (810-850 ई.) के शासन-काल में यह संघर्ष पुनः आरम्भ हो गया। देवपाल ने नागभट्ट द्वितीय को पीछे हटने के लिए बाध्य किया, उत्तर-भारत में अपनी श्रेष्ठता को स्थापित किया तथा नवीन प्रतिहार-शासक मिहिरभोज (836-885 ई.) को भी एक युद्ध में परास्त किया। परन्तु देवपाल के उत्तराधिकारी दुर्बल हुए। पाल-शासकों की शक्ति का विकास एक बार पुनः महीपाल प्रथम (988-1038 ई.) के शासन-काल में हुआ परन्तु कन्नौज के लिए प्रतिहारों के प्रतिद्वन्द्वी बने रहने की स्थिति में वे देवपाल के शासन-काल के पश्चात् कभी नहीं आये। मिहिरभोज ने देवपाल की मृत्यु के पश्चात् कन्नौज पर ही नहीं अपितु, सम्भवतया, बिहार पर भी अधिकार करने में सफलता प्राप्त की। मिहिरभोज ने दक्षिण-भारत की ओर बढ़ने का भी प्रयत्न किया जिसके कारण राष्ट्रकूट-शासक कृष्णा द्वितीय (880-914 ई.) से उसका दो बार संघर्ष हुआ। प्रथम युद्ध में उसे सफलता मिली परन्तु दूसरे युद्ध में उसकी पराजय हुई। तब भी मिहिरभोज उत्तर-भारत में एक विशाल साम्राज्य स्थापित करने में सफल हुआ।

इस प्रकार, गंगा-घाटी और कन्नौज को अधिकार में करने के प्रयत्नों के फलस्वरूप प्रतिहारों, पालों और राष्ट्रकूटों में जो त्रिदलीय संघर्ष हुआ उसमें प्रतिहारों को सफलता प्राप्त हुई। निस्सन्देह, राष्ट्रकूट-शासक इन्द्र तृतीय ने 915-918 ई. के मध्य एक बार पुनः उत्तर-भारत पर आक्रमण करके प्रतिहार-शासक महीपाल को परास्त किया और कन्नौज को भी लूटने में सफलता पायी परन्तु सदैव की भाँति राष्ट्रकूटों की यह सफलता भी अस्थायी रही।

उत्तर भारत में वे और विस्तार न कर सके। इस संघर्ष का अन्तिम परिणाम पाल-वंश का बंगाल तक सीमित हो जाना तथा प्रतिहार और राष्ट्रकूटों की शक्ति का दुर्बल हो जाना था। दसवीं सदी के प्रारम्भिक काल में ही ये तीनों राजवंश पर्याप्त दुर्बल हो गये थे जिसका परिणाम इन तीनों का पतन और भारत का विभिन्न राज्यों में बँट जाना था। प्रतिहारों के पश्चात् उत्तर-भारत को एक साम्राज्य में संगठित करने का प्रयत्न भी किसी ने नहीं किया। दूसरी तरफ 1000 ई. के पश्चात् भारत अपने आन्तरिक सामाजिक तनाव, नैतिक और धार्मिक

पतन तथा राजनीतिक विकेन्द्रीकरण को रोकने में असमर्थ हो गया। ऐसे ही समय में तुर्कों के आक्रमण हुए और अपनी दुर्बलताओं से ग्रस्त भारत उनका मुकाबला करने में असमर्थ रहा तथा भारत में तुर्की सत्ता स्थापित हो गयी। वास्तव में भारत की दुर्बलता हर्ष की मृत्यु के समय में नहीं अपितु 1000 ई. के लगभग गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य के नष्ट हो जाने के समय से आरम्भ हुई। उस समय से भारत राजनीतिक दृष्टि से विभक्त हो गया, चक्रवर्ती सम्राटों का आदर्श नष्ट हो गया, सामाजिक विभक्तीकरण और उससे उत्पन्न तनाव स्पष्ट रूप से सामने आ गया, सम्पूर्ण देश नैतिक और धार्मिक पतन से पूर्ण हो गया तथा भारत का विदेशों से सम्पर्क नष्ट हो गया और इन सभी के कारण भारत और उसकी संस्कृति पतन के मार्ग पर अग्रसर हुई।